Dr. Raj Gopal
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar Madhubani.
Mail ID:- rajgopal7755@gmail.com

Locke : Theory of Knowledge
(लॉक : ज्ञान का सिद्धान्त)

लॉक अनुभववादी ज्ञानमीमांसा के प्रवर्तक दार्शनिक थे। ये मानव मन में जन्म के समय अंकित प्रत्यय का खंडन कर अनुभव को ही ज्ञान प्राप्ति का साधन मानते हैं। हम जो कुछ भी जानते हैं इन्द्रिय अनुभव से जानते हैं। इन्द्रियाँ ही हमारे ज्ञान का एकमात्र स्रोत हैं। वे मन को कोरे कागज, खाली पट्टी, अंधेरा कमरा आदि की तरह मानते हैं। संवेदन और स्वसंवेदन रूपी दो माध्यमों से ही बुद्धि का रिक्त भण्डार भरता है। वे ज्ञान को प्रत्ययात्मक मानते हैं। वे ज्ञान की परिभाषा में कहते हैं कि - ज्ञान हमारे प्रत्ययों के संयोग और उनके बीच संगति और असंगति के प्रत्यक्षीकरण के अतिरिक्त कुछ नहीं है। प्रत्ययों की पारस्परिक संगति ही ज्ञान की प्रामाणिकता है। संगत ज्ञान प्रामाणिक है तथा असंगत ज्ञान अप्रामाणिक।

हमारी बुद्धि में कुछ आदिम प्रत्यय हैं। किसी ज्ञान का प्रमाण इन आदिम प्रत्यय से मेल खाना है। इन आदिम प्रत्यय के विपरीत होना अप्रमाण है। जैसे- चार भुजा वाले त्रिभुज का विचार तथा बहादुर कायर का विचार काल्पनिक है क्योंकि इनमें पारस्परिक असंगति है। इसका अर्थ है कि त्रिभुज का एक आदि प्रत्यय हमारे बुद्धि में तीन भुजा वाले त्रिभुज से संगत नहीं है। अतः ज्ञान का प्रमाण, प्रत्ययों के संगति असंगति पर निर्भर है।

Scanned with CamScanner

लॉक के अनुसार प्रत्ययों की सहमति और असहमति चार प्रकार की होती है। जो निम्न हैं।

(i) अभेद अथवा भेद :- जब हमारी बुद्धि को प्रत्यय प्राप्त होती है तो हमारी बुद्धि उन प्रत्यय से अभेद या भेद का अनुभव करती है। जब हमें श्वेत रंग की संवेदना प्राप्त होती है तो बुद्धि श्वेत का लाल रंग से भेद स्पष्ट करती है। जब हम कहते हैं कि त्रिभुज के तीनों कोणों का योग दो समकोण होता है इसमें अभेद स्थापित करते हैं। इस प्रकार जब हमें प्रत्यय प्राप्त होता है तो उसके आपसी संबंध (भेद एवं अभेद) का स्पष्ट अनुभव होता है।

(ii) सम्बंध (Relation) :- इसमें संगति असंगति का अनुभव संबंध के रूप में होता है। बाह्य और आन्तरिक संवेदनाएँ भिन्न भिन्न होती है। इन बाह्य या आन्तरिक संवेदनाओं में समानता या असमानता के आधार पर हम संबंध का अनुभव करते हैं। जितनी संवेदनाएँ एक समान होती हैं उनकी अलग अलग प्रत्यय का निर्माण होती है। अतः समानता या असमानता ही संगति असंगति का सूचक है।

(iii) साहचर्य या अनिवार्य संबंध (Co-existence) :- किसी निर्णय या परामर्श के उद्देश्य में दो प्रत्ययों का साथ-साथ होना या न होना। जैसे- सेब स्वादिष्ट और छिलका है। मेज भूरी और छिलती नहीं है।

(IV) यथार्थ अस्तित्व (Real existence) :- इसका मतलब है कि बुद्धिगत प्रत्यय के अनुरूप वस्तु की यथार्थ सत्ता होनी चाहिये। कुछ ऐसी प्रत्यय हैं जिनकी सत्ता बुद्धि के बिना भी है, जैसे- ईश्वर की सत्ता है। ईश्वर का अस्तित्व मानव बुद्धि से स्वतंत्र है। इस प्रकार से स्पष्ट है कि प्रत्ययों की पारस्परिक संगति ही ज्ञान की यथार्थता या अयथार्थता का सूचक है। यदि आदिरूप ज्ञान से प्रत्यय मिलते हैं तो ज्ञान यथार्थ है नहीं मिलते हैं तो अयथार्थ है।

Scanned with CamScanner

लॉक के अनुसार संवेदन और स्वसंवेदन ही ज्ञान के मूल स्रोत हैं। इनके द्वारा प्राप्त सरल प्रत्ययों से हमारी आत्मा सक्रिय होकर जटील प्रत्ययों का निर्माण करती है। लॉक के अनुसार वास्तविक प्रत्यय वे हैं जिनके मूल रूप (बिम्ब) वाह्य जगत में हैं। जिन प्रत्ययों के अनुरूप वाह्य जगत में कोई (बिम्ब) वस्तु न हो उसे काल्पनिक प्रत्यय कहते हैं। इस सिद्धान्त को लॉक ने सत्य का संवादिता सिद्धान्त कहा है। लॉक के अनुसार वाह्य जगत में स्थित बिम्बों का जो पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है उसे पर्याप्त और जो प्रत्यय मूल बिम्बों का अपूर्ण प्रतिनिधित्व करता है उन्हे अपर्याप्त कहा जाता है। इस दृष्टिकोण से सरल प्रत्ययों एवं विकारों तथा संबंधों के प्रत्यय को पर्याप्त कहा जाता है, क्योंकि ये अपने मूलबिम्बों का पूर्ण प्रतिनिधित्व करते हैं। परन्तु द्रव्य के प्रत्यय अपर्याप्त प्रत्यय हैं क्योंकि ये अपने मूल बिम्बों का पूर्ण प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

प्रत्ययों की सत्यता और असत्यता का संबंध परामर्शों से है। वास्तव में कोई प्रत्यय स्वयं में सत्य या असत्य नहीं होता है। सत्यता और असत्यता निर्णयों का वाह्य लक्षण है। जो निर्णय वाह्य जगत में स्थित तथ्यों के अनुरूप होता है उसे सत्य निर्णय कहा जाता है। इसके विपरीत यदि निर्णय वाह्य वस्तुओं के अनुरूप नहीं होता है उसे असत्य निर्णय कहा जाता है। अतः लॉक निर्णयों के अन्तर्गत साक्ष्यों का मूल्यांकन करता है। निर्णयों में पूर्ण निश्चितता का अभाव होता है। इस आधार पर निर्णय और ज्ञान में अंतर होता है। ज्ञान के अन्तर्गत प्रत्ययों के पारस्परिक संबंधों का प्रतिभान होता है। अतः ज्ञान को लॉक ने निर्णयों से उच्च माना है।

लॉक ने तीन प्रकार के प्रामाणिक ज्ञान माना है।

(1) प्रातिभ ज्ञान या आन्तर प्रत्यक्ष ज्ञान (Intuitive Knowledge):- इसे ज्ञान का सर्वोच्च स्तर कहा जाता है। इसके अन्तर्गत जो

Scanned with CamScanner

प्रत्ययों के सहमती या असहमती का ज्ञान बिना किसी अन्य प्रत्यय के माध्यम के साक्षात रूप से होता है। यह किसी वस्तु का अपरोक्ष ज्ञान है। जैसे उजला रंग काला नहीं है, तीन दो से अधिक है, आदि। प्रातिभ ज्ञान सबसे अधिक स्पष्ट और निश्चित होता है। यह ज्ञान स्वतः सिद्ध, असंदिग्ध एवं निश्चयात्मक ज्ञान है। इसे लॉक ने प्रामाणिकता का सत्य मानता है।

(ii) बाह्य प्रत्यक्ष ज्ञान (Sensitive Knowledge) :- यह ज्ञान संवेदनों से प्राप्त होता है। इसे लॉक ने प्रत्यक्ष ज्ञान कहा है। प्रत्ययों के जटिल प्रत्यय और सरल प्रत्ययों के मूलभूतों का अस्तित्व बाह्य जगत में होता है। अतः इसका सत्य या असत्य होना स्वाभाविक है। मूलगुण वस्तुनिष्ठ होते हैं। अतः वस्तुओं के वास्तविक गुण होने के कारण उनके द्वारा हमारी आत्मा में अंकित किये गये प्रत्यय सत्य होते हैं। उपगुण भले ही ही वस्तुनिष्ठ नहीं होते हैं परन्तु वह मूल गुणों के द्वारा आत्मा में उत्पन्न किये जाते हैं इसलिए ये भी सत्य होते हैं। जटिल विचारों और संबंधों का प्रत्यक्ष भी बाह्य जगत के वस्तु के अनुरूप होने का दावा नहीं करता है, अतः इसके ज्ञान को भी सत्य माना जाता है। इस प्रकार लॉक के अनुसार बाह्य प्रत्यक्ष ज्ञान वास्तविक होता है। इसमें बाह्य जगत का ज्ञान इन्द्रियानुभव से होता है। इसे ज्ञान का सबसे निम्न स्तर का कहा जाता है।

(iii) परोक्ष ज्ञान (Demonstrative Knowledge) :- लॉक ने इसे परोक्ष ज्ञान कहा है। यह एक प्रकार का अनुमान है। इसके अन्तर्गत दो प्रत्ययों की सहमती असहमती का ज्ञान एक तीसरे प्रत्यय पर आश्रित होता है। इसकी सत्यता का तर्क के द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस प्रकार से यह एक निगमनात्मक अनुमान है। जैसे ईश्वर के अस्तित्व सिद्ध करने के लिए दी जाने वाली युक्तियाँ निगमनात्मक ज्ञान के अन्तर्गत आती है। इस प्रकार के ज्ञान में कई सोपान होते हैं इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए मध्यस्थ सोपान के रूप में प्रातिभ ज्ञान का होना आवश्यक है। यह ज्ञान प्रातिभ ज्ञान से थोड़ा कम सत्य है।